आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 26 रोहतक, 7 दिसम्बर, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

चार पुरुषार्थों की संक्षिप्त व्याख्या

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

ईश्वर जब जीव को उसके कर्मानुसार धरती पर मनुष्य योनि में भेजता है तब उसको चार पुरुषार्थ करने का आदेश देता है, जिससे वह अच्छे कर्म करते हुए, अपने कर्त्तव्यों का भलीभांति पालन करते हुए तथा अपने जीवन को और दूसरों के जीवन को सुखी बनाते हुए अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके, जिसकी प्राप्ति के लिए ईश्वर ने जीव को मनुष्य योनि में भेजा था। कारण मनुष्य योनि से ही जीव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। यही योनि मोक्ष प्राप्ति की अन्तिम योनि है। पुरुषार्थ चार हैं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। वैसे देखा जाये तो मोक्ष कोई पुरुषार्थ नहीं कारण यह तो धर्म, अर्थ, काम इन तीनों पुरुषार्थों का फल है, परिणाम है। पर कहने के लिए इसे भी पुरुषार्थ ही कह देते हैं। परन्तु यह पुरुषार्थ कैसे हो सकता है, कारण पुरुषार्थ में तो कर्म करना पड़ता है, परन्तु मोक्ष में तो जीव को कोई काम नहीं करना पड़ता। वह तो केवल ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए सब किस्म के आनन्द को प्राप्त करता रहता है जिसे परम आनन्द कहते हैं। पहले के विद्वान् मोक्ष यानी मुक्ति की कोई अवधि नहीं मानते थे। उनका कहना था कि मुक्ति का अर्थ ही होता है, हमेशा के लिए जीवन-मरण से मुक्त हो जाना यानि मुक्ति मिलने के बाद फिर कभी भी जन्म नहीं लेना होता। परन्तु महर्षि दयानन्द का मानव मात्र पर यह एक बहुत बड़ा उपकार है कि उन्होंने मुक्ति की भी एक अवधि बताई है। महर्षि का कहना है कि जिन अच्छे कर्मों से मुक्तिमिली है, जब उन अच्छे कर्मों के करने की कोई अवधि होती है तो उसके फल के रूप में मिली मुक्ति की भी अवधि होनी जरूरी है चाहे वह कितनी भी लम्बी हो। इसी आधार पर महर्षि जी ने वेदों से जानकर मुक्ति या मोक्ष की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्ष की मानी है।

पुरुषार्थ के बारे में यह बताना उचित है कि पुरुषार्थ का तात्पर्य है कि किसी काम को कर्त्तव्य व परोपकार की भावना से पूरे मनोयोग के साथ तथा पूरे साहस और उत्साह के साथ किसी काम को किसी अच्छे उद्देश्य के लिए करना ही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ बुद्धिपूर्वक व सात्त्विक भाव से ही होता है, इसलिए केवल मनुष्य को ही पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है। पशु-पक्षी, कीट-पतंग, वृक्षादि को नहीं कारण ये सब केवल भोग योनियाँ हैं। इनके किये हुए कर्मों का फल इनको नहीं मिलता। ये योनियाँ केवल स्वाभाविक कर्म ही करती हैं, यानि सोना-जागना, उठना-बैठना, खाना-पीना तथा सन्तान पैदा करना आदि। इन कर्मों में पुरुषार्थ करने की कोई आवश्यकता नहीं। परन्तु मनुष्य योनि ही एक ऐसी योनि है जो भोग योनि के साथ-साथ कर्म योनि भी है। इसको अपने किये हुए अच्छे या बुरे कर्मों का फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था के द्वारा अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में और बुरे कर्मों का फल दु:ख के रूप में मिलता है। इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य को अन्य जीवों की अपेक्षा अधिक बुद्धि दी है, जिससे वह चिन्तन-मनन करके यानि अच्छे-बुरे की जांच करके अच्छे कर्म करे और बुरे काम न करे ताकि वह अच्छे काम करके मोक्ष पाने का अधिकारी बन सके। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसमें स्वाभाविक ज्ञान कम और नैमित्तिक ज्ञान अधिक होता है। इसलिए मनुष्य सिखाने से सीखता है। बिना सिखाए मनुष्य पशुवत् ही रह जाता है। सिखाने के उद्देश्य से ही ईश्वर ने मनुष्यों के लिए सृष्टि के आदि में वेदज्ञान दिया जिसको सुनकर या पढ़कर वह यह जान सके कि अच्छे कर्म क्या हैं? और बुरे कर्म क्या हैं? यह जानने के बाद मनुष्य अच्छे काम करता हुआ तथा अपना और दूसरों के जीवन को सुखी व 'खुशहाल' बनाते हुए अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके। जीव मनुष्य योनि प्राप्त करके ही वेद पढ़ सकता है और उनके अनुसार चलकर मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इसके अलावा मोक्ष प्राप्त करने का कोई मार्ग नहीं। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह मनुष्य योनि पाकर और वेदानुकूल चलकर अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अन्त में मोक्ष को प्राप्त करे। तीन पुरुषार्थ इसी भांति हैं।

1. धर्म-धर्म का तात्पर्य है कि गुणों को धारण करना जिनके धारण करने से उसको स्वयं को सुख व लाभ होता हो साथ ही दूसरों को भी सुख व लाभ मिलता हो। जैसे ईमानदारी, सत्य बोलना, किसी को धोखा न देना, निष्पक्ष बात कहना, दया, करुणा, परोपकार आदि। इन गुणों को अपनाने से मनुष्य को स्वयं को लाभ मिलता है तथा उसका जीवन भी सुखी बनता है। साथ ही दूसरों का भी हित होता है। इसके विपरीत ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा, बेईमानी, झूठ बोलना, किसी को धोखा देना आदि अधर्म हैं। इनको अपनाने से मनुष्य स्वयं दु:खी होता है तथा अन्यों को भी दु:ख पहुँचाता है। धर्म मनुष्य के लिए बहुत जरूरी है, इससे उसकी आत्मा पवित्र होती है और दूसरों का उसके ऊपर विश्वास जमता है। आज कल लोग सही धर्म को न समझकर केवल बाहरी चिह्नों तथा आडम्बरों व पाखण्डों को धर्म मानकर धर्म का रूप विकृत कर दिया है। हमारे पौराणिक भाई तो केवल मन्दिर में दिन में दो बार जाकर किसी देवी या देवता के दर्शन मात्र को ही धर्म मान बैठा है। बाकी समय वह कितना भी पाप कर्म करे उसका देवता उसे माफ कर देगा और उसे पाप कर्म करने की छूट मिल जायेगी। इसी भांति हमारे मुस्लिम भाई भी मानते हैं कि दिन में पाँच बार नमाज पढ़ लो और ईद पर तीस दिन रोजे रख लो बाकी फिर वह चाहे जितना भी पाप कर्म करे, अल्लाह उसे क्षमा कर देगा और मरने के बाद उसे जन्नत (स्वर्ग) भेज देगा। इसी प्रकार हमारे ईसाई भाई मानते हैं कि आप एक बार ईसा पर विश्वास ले आओ फिर वह जितने भी पाप कर्म करेगा, ईसा उसको गोड (ईश्वर) से सिफारिश करके पापों से मुक्त करवा देगा और उसे स्वर्ग में स्थान दिलवा देगा। लोगों ने धर्म को इतना सस्ता बना लिया है जिससे भोले लोग सस्ते धर्म की ओर झुक जाते हैं और अधर्म के कार्यों में लिप्त हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द का मानव मात्र पर यह इतना बड़ा उपकार है कि उन्होंने सच्चे धर्म के स्वरूप को वेदों से जानकर भटके हुए लोगों के सामने

क्रमश: पृष्ठ 8 पर...

क्यों माने ईश्वर को?

❑ मनमोहन कुमार आर्य

ईश्वर को क्यों माने? यह प्रश्न किसी भी मननशील मनुष्य के मस्तिष्क में आ सकता है। वह अपनी बुद्धि के अनुसार विचार करेगा और हो सकता है कि उसे कोई सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त न हो। यदि वह अपने परिवार व मित्रों से इसकी चर्चा करेगा तो सबके उत्तर अलग-अलग होंगे। सभी मतों व सम्प्रदायों के विचार व उत्तर, परस्पर वैचारिक समानता न होने के कारण, अलग-अलग होंगे, यह निश्चित है। अब जिज्ञासु मनुष्य को उन सभी विचारों व मान्यताओं पर विचार कर निर्णय करना होगा। हमें लगता है कि उसे जो भी उत्तर प्राप्त होंगे या तो वह गलत होंगे या अधूरे होंगे जिससे जिज्ञासु प्रवृत्ति के विवेकशील मनुष्य का समाधान नहीं हो सकेगा। उसके पास एक ही मार्ग शेष रहता है कि वह किसी वेद या आर्य विद्वान् को शरण ले और उससे इस प्रश्न की चर्चा करे, तो अनुमान है कि उसका पूरा समाधान अवश्य ही होगा। इसका कारण यह है कि वेद व आर्य विद्वानों के पास ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद का प्रकाश है। इन वैदिक आर्य विद्वानों में ईश्वर की विशेष कृपा भी होती है जो कि सम्भवतः अन्य मतों के विद्वानों व अनुयायियों में नहीं देखी जाती जबकि उनके दावे बड़े-बड़े होते हैं। विभिन्न मतों के आचार्यों व उनके अनुयायियों के ईश्वर सम्बन्धी किए जाने वाले दावों में उनकी अज्ञानता छिपी हुई दिखाई देती है। सत्य व असत्य का जैसा विश्लेषण व समीक्षा वेद व आर्य विद्वान् करते हैं, वैसी समीक्षा व विश्लेषण अन्य किसी मत में नहीं किया जता है। यही कारण है कि वेदभक्त आर्यों को ईश्वर के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होने के साथ उन्हें ईश्वर के मानने से लाभ व न मानने से होने वाली हानियों का भी पूरा-पूरा ज्ञान होता है।

हम एक पौराणिक मान्यता व विश्वास वाले परिवार में जन्मे और अपनी आयु के 18 से 20 वर्षों तक हम अपने सभी धार्मिक कार्य यथा पूजा-उपासना आदि पौराणिक रीति के अनुसार ही करते थे। एक युवा सज्जन विद्वान् मित्र की प्रेरणा से हमें आर्यसमाज का परिचय मिला जो हमें रविवार के अवकाश के दिन खाली समय में वहां घुमाने ले जाने लगे। हमने वहां विद्वानों के प्रवचनों को सुना और समाज-मन्दिर में उपलब्ध सत्यार्थ प्रकाश आदि वैदिक साहित्य को लेकर पढ़ा। आर्यसमाज के विद्वानों के तर्क पूर्ण प्रवचनों और सत्यार्थप्रकाश की बुद्धि व तर्क पूर्ण मान्यताओं को पढ़कर उन विचारों व मान्यताओं का हमारे मन व मस्तिष्क पर धीरे-धीरे प्रभाव होने लगा। अब विचार करने पर हमें अपनी जन्मना पौराणिक मान्यताओं की सत्यता के सन्तोषप्रद समाधान नहीं मिले और आर्यसमाज की वेदमूलक मान्यताओं की सत्यता की साक्षी व पुष्टि हमारा मन-मस्तिष्क व हृदय करने लगा। फिर जो होना था वही हुआ। हमने आर्यसमाज की सदस्यता का फार्म लेकर भर दिया और आर्यसमाज के साप्ताहिक यज्ञ व सत्संगों में वहां जाने लगे। हर बार वहां से किसी नये धार्मिक विषय की पुस्तक ले आते जिसे पढ़कर उस विषय का ज्ञान हो जाता था। वेद व आर्यसमाज की मान्यताओं को हम अपने पौराणिक तर्कों से काटना चाहते थे, परन्तु हमारे पास तर्क होते ही नहीं थे। अतः वैदिक विचारों ने हमारे पौराणिक विचारों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली जिसका परिणाम है कि हम विगत 40 से 45 वर्षों से मन व आत्मा से आर्यसमाज की विचारधारा से जुड़े हुए हैं।

ईश्वर को मानना व न मानना हमारी निजी सोच पर निर्भर होता है। संसार में बहुत से लोग हैं जो ईश्वर को नहीं मानते। उन्हें साम्यवादी कह सकते हैं। यह बात अलग है कि बंगाल व अन्यत्र रहने वाले हमारे भारत के साम्यवादी व उनके कुटुम्बी दुर्गापूजा आदि जैसे नाना प्रकार के धार्मिक अनुष्टान भी करते हैं। जो लोग ईश्वर को बिल्कुल नहीं मानते और जो विद्रूप ईश्वर पूजा को मानते व करते हैं, उसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि वह न तो स्वयं आत्मचिन्तन करते हैं और न ही ईश्वर व जीवात्मा विषयक सर्वाधिक प्रमाणिक वैदिक साहित्य को पढ़ते हैं। यदि यह लोग उपनिषद् ही पढ़ लें तो ईश्वर के स्वरूप से परिचित हो सकते हैं। उपनिषदें यद्यपि संस्कृत भाषा में हैं परन्तु इनके हिन्दी सहित अनेक भाषाओं में भाष्य व अनुवाद उपलब्ध हैं। ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप और संसार की रचना की पहेली के यथार्थ रहस्य को जानने के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में ईश्वर की सत्ता को तर्क व युक्ति से समझाया गया है।

सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी ने प्रश्न प्रस्तुत किया है कि आप ईश्वर-ईश्वर कहते हो, परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो? इसका उत्तर देते हुए वह कहते हैं कि सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से। फिर वह प्रश्न प्रस्तुत करते हैं कि ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते। इसके उत्तर में वह न्यायदर्शन का सूत्र- **"इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेष्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।"** प्रस्तुत करते हैं और बताते हैं कि श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख, दुःख, सत्यासत्य विषयों के साथ जो सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है, उसको प्रत्यक्ष कहते हैं, परन्तु वह निर्भ्रम हो। अब विचारना चाहिये कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है, गुणी का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथिवी उस का आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचनाविशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। और जब आत्मा, मन और इन्द्रियों को किसी विशय में लगाता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाते हैं। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से (होता) है। और जब जीवात्मा शुद्ध होकर परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है, उस को उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं।

जब परमेश्वर का (शुद्ध हृदय से विचार व ध्यान करने पर) प्रत्यक्ष होता है अनुमानादि से परमेश्वर के ज्ञान होने में क्या सन्देह है? क्योंकि कार्य को देख के कारण का अनुमान होता है। हमने इन पंक्तियों में महर्षि दयानन्द के विचारों की कुछ झलक प्रस्तुत की है। विस्तार से जानने के लिए जिज्ञासुओं को सत्यार्थ प्रकाश का गहन अध्ययन करना चाहिये। हमारा अनुमान है कि बार-बार सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से अध्येता को ईश्वर के बारे में निर्भ्रान्त ज्ञान अवश्य हो जाता है।

ईश्वर है और उसी ने इस सृष्टि को बनाया है तथा वही इसका संचालन कर रहा है, उसी से, जन्म के बाद मृत्यु की भांति, संसार की प्रलय होती है व आगे चलकर इस सृष्टि की भी होगी। उसी परमात्मा से सभी प्राणी अस्तित्व में आते हैं और अपने कर्मानुसार सुख-दुःख रूपी फलों का भोग करते हैं। इस सन्दर्भ में हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि संसार के किसी वैज्ञानिक, मत-पन्थ के आचार्य व अन्य के पास सृष्टि और सभी प्राणियों के जन्मदाता का बुद्धिसंगत निर्भान्त ज्ञान व उत्तर उपलब्ध नहीं है। यह केवल वेद और वैदिक साहित्य में ही उपलब्ध होता है। अभी तक ईश्वर व जीवात्मा विषयक वेद, दर्शन, उपनिषद् व सत्यार्थ प्रकाश आदि किसी ग्रन्थ की मान्यताओं व सिद्धान्तों का किसी वैज्ञानिक व नास्तिक विद्वान् ने युक्ति व तर्कपूर्वक खण्डन नहीं किया है। अतः ईश्वर व जीवात्मा के अस्तित्व विषयक अन्य कोई सन्तोषजनक पक्ष न होने के कारण सभी मनुष्यों को वेदसम्मत ईश्वर को मानने में ही कल्याण है। ईश्वर है, यदि उसे मानेंगे तो ईश्वर को मानने से मिलने वाले लाभों से समृद्ध होंगे और यदि नहीं मानेंगे तो उन लाभों से वंचित हो जायेंगे। कुछ क्षण के लिए यदि इस मिथ्या मान्यता को भी स्वीकार कर लें कि ईश्वर नहीं है, तो भी ईश्वर को मानने से हमें कोई हानि नहीं होगी। क्योंकि जब वह है ही नहीं तो हानि होने का प्रश्न ही नहीं है। परन्तु यदि ईश्वर है और हम उसे नहीं मानेंगे तो हानि होना निश्चित है। अतः दोनों ही स्थितियों में ईश्वर को मानने में ही मनुश्य को लाभ है।

ईश्वर को मानने से क्या लाभ हैं? पहला लाभ तो यह है कि ईश्वर को जानने व मानने तथा उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने से जीवात्मा के बुरे गुण-कर्म-स्वभाव छूटकर ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप, शुद्ध व पवित्र, हो जाते हैं। आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि जिससे दुःखों की निवृत्ति होने के साथ सभी प्रकार के भय दूर होते हैं। मृत्यु का भय भी समाप्त हो जाता है। अभ्युदय व निःश्रेयस

क्रमशः पृष्ठ 7 पर.....

आत्मा का दर्शन

गतांक से आगे....

पूर्व में कहे गये चक्र सभी चेतना के केन्द्र हैं। जिनमें ध्यान करने से चक्रों का जागरण होता है। इसे दुर्ग के भीतर जाने का मार्ग भी कहते हैं। एक चक्र प्रकाशित हो आगे वाले चक्र का मार्ग प्रशस्त कर देता है। आत्मा का स्वरूप परिच्छिन्न होने से उसकी सर्वत्र अव्याहत गति है अर्थात् बेरोक-टोक वह शरीर में कहीं भी जा सकता है। परन्तु जहाँ उसका गमनागमन और कार्य करने का अथवा विश्राम करने का स्थान है, मिलन तो वहीं पर ही होगा। हृदयाकाश में अंगुष्ठ प्रमाण स्थान है जहाँ आत्मा-परमात्मा दोनों व्याप्य व्यापक हो रहे हैं। जब किसी अधिकारी से सामान्य बात या कार्य सम्बन्धी विचार करना हो तो कार्यालय उपयुक्त स्थान है और जब निजी जीवन या आत्मिक सम्बन्ध में विचार-विमर्श करना हो तब घर में विश्राम के समय मिलने का समय अच्छा माना जाता है। इसी भाँति ध्यान गहराई और आत्मिक अनुभूति के लिये शर्यणावति अर्थात् हृदय में ही ध्यान-धारणा को बनाना होगा। इसके अभाव में पर्वतों की घाटियों और गहरी खाइयों के चक्र ही लगाने पड़ सकते हैं। सीधा मार्ग तो जो यहाँ बतलाया है, वह यही है।

पूज्य आचार्य बलदेव जी

(वेद-स्वाध्याय से साभार) —आचार्य बलदेव

भजन

टेक-सारी चीजें अच्छी हैं जंगल वन देहात में।

1. सृष्टि रची पृथ्वी पहले बने वन जंगल।
   प्रकृति देवी ने किया जंगल में मंगल।
   प्रभु चित्रकारी, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥
2. वनस्पति अन्न से वन में जीव जन्म लेते,
   अग्नि वायु आदित्य अंगिरा को वेद देते,
   ज्ञान उजियारी है, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥
3. वेद और वेदांग पढ़े जंगल वन में किये याद,
   गौतम पतंजलि कपिल व्यास जैमिनि कहते कणाद,
   सभ्यता हमारी है, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥
4. शिव नारद कनक च्यवन भारद्वाज वन में,
   वाल्मीकि ऋषि शुक्र महाराज वन में,
   योगी तपधारी हैं, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥
5. साधु ऋषि आश्रम हैं गुरुकुल वन में,
   लव और कुश ध्रुव रहे पल वन में,
   वाले शस्त्र खिलाड़ी हैं, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥
6. शुद्ध दुग्ध दही शहद घी देहात में,
   सादगी सच्चाई शुद्ध हृदय भी देहात में,
   हो सब खेती क्यारी, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥
7. केमड़ा गोमा विजखपरा बासा, सुखमक्षा, चिरपटा,
   गिलोय गोरखमुंडी शिवलिंगी ब्राह्मी पत्थरचट्टा,
   औषधि तरकारी है, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥
8. परम धर्म कर्म शर्म मिलते हैं देहात में,
   प्रेम परम भरम मरम मिलते हैं देहात में,
   ढूंढ़ी सच्ची यारी है, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥
9. राममूर्ति किकर सिंह दारा सिंह पहलवान हैं,
   जोगिन्दर सिकन्दर छोटूराम जी दीवान हैं,
   पेशा जमींदारी है, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥
10. सारी चीजें अच्छी लागे, एक की कसर है,
    'ईश्वरसिंह' उस बिन बेड़ा अवधर है,
    विद्या बिना अनाड़ी है, जंगल वन देहात में। सारी चीजें अच्छी..... ॥

भेंटकर्त्ता : भलेराम आर्य, ग्राम सांघी, जिला रोहतक 9416972879

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

चतुर्थ समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 312. 'ब्रह्मयज्ञ' और 'देवयज्ञ' संधिकाल में ही क्यों करने चाहिएं?

उत्तर-जो संधि अर्थात् संध्या काल में होम होता है वह हुतद्रव्य प्रात:काल तक वायुशुद्धि तक वायुशुद्धि द्वारा सुखकारी होता है। जो अग्नि में प्रात:काल में होम किया जाता है वह हुतद्रव्य सायंकाल पर्यन्त वायु की शुद्धि द्वारा बल, बुद्धि और आरोग्यकारक होता है। इसलिए दिन और रात्रि की सन्धि में अर्थात् सूर्योदय और अस्त समय में परमेश्वर का ध्यान और अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए। और जो ये दोनों काम सायं और प्रात:काल में न करे उसको सज्जन लोग सब द्विजों के कर्मों से बाहर निकाल देवें अर्थात् उसे शूद्रवत् समझें।

कन्हैयालाल जी आर्य

प्रश्न 313. त्रिकाल सन्ध्या क्यों नहीं करनी चाहिए?

उत्तर-तीन समय में सन्धि नहीं होती। प्रकाश और अन्धकार की सन्धि भी सायं-प्रात: दो ही वेला में होती है। जो इसको न मानकर मध्याह्न काल में तीसरी सन्ध्या माने, वह मध्यरात्रि में भी सन्ध्योपासन क्यों न करें? जो मध्यरात्रि में भी करना चाहे तो प्रहर-प्रहर, घड़ी-घड़ी, पल-पल और क्षण-क्षण की भी सन्धि होती है, उनमें सन्ध्योपासन किया करे। जो ऐसा भी करना चाहे तो हो ही नहीं सकता। और किसी शास्त्र का मध्याह्न सन्ध्या में प्रमाण भी नहीं। इसलिए दोनों कालों में सन्ध्या और अग्निहोत्र करना समुचित है, तीसरे काल में नहीं। और जो तीन काल होते हैं, वे भूत, भविष्यत् और वर्तमान के भेद से हैं, सन्ध्योपासन के भेद से नहीं।

प्रश्न 314. 'पितृयज्ञ' किसे कहते हैं?

उत्तर-जिसमें जो देव, विद्वान्, ऋषि जो पढ़ने-पढ़ाने हारे, पितर, माता-पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परम योगियों की सेवा की जाती है वह 'पितृयज्ञ' कहाता है। 'पितृयज्ञ' के दो भेद हैं—एक 'श्राद्ध' और दूसरा 'तर्पण'?

प्रश्न 315. 'श्राद्ध' और 'तर्पण' को परिभाषित करें।

उत्तर-'श्राद्ध' अर्थात् श्रत् सत्य का नाम है। जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाये उसको श्रद्धा और श्रद्धा से कर्म किया जाये उसका नाम 'श्राद्ध' है। जिस-जिस कर्म से विद्यमानता माता-पिता आदि पितर प्रसन्न हों, उसका नाम 'तर्पण' है, परन्तु ये दोनों 'श्राद्ध' और 'तर्पण' जीवितों के लिए हैं, मृतकों के लिए नहीं।

प्रश्न 316. 'देव' किसे कहते हैं?

उत्तर-जो विद्वान् हैं उनको 'देव' कहते हैं। जो सांगोपांग चारों वेदों के जानने वाले हों, उनका नाम 'ब्रह्मा' और जो उन से न्यून पढ़े हों उनका भी नाम देव अर्थात् विद्वान् है। उनके सदृश विदुषी स्त्री, 'ब्राह्माणी' और 'देवी', उनके तुल्य पुत्र और शिष्य और उनके सदृश उनके सेवक-उन सबकी सेवा करना 'श्राद्ध' और 'तर्पण' है।

प्रश्न 317. 'ऋषि तर्पण' किसे कहते हैं?

उत्तर-जो विद्वान् होकर पढ़ावे और जो उनके सदृश विद्यायुक्त उनकी स्त्रियाँ कन्याओं को विद्यादान देवें, उनके तुल्य पुत्र और शिष्य तथा उनके सेवक हों, उनका सेवन-सत्कार करना 'ऋषि तर्पण' है।

प्रश्न 318. पितर, सोमसद् कौन-कौन से होते हैं जिनका श्राद्ध में तर्पण करना चाहिए?

उत्तर-(1) जो परमात्मा और पदार्थविद्या में निपुण हों वे 'सोमसद्', (2) **अग्निष्वात्त**-जो अग्नि अर्थात् विद्युतादि पदार्थों के जानने वाले हों। (3) **बर्हिषद्**-जो उत्तम विद्या बुद्धि युक्त व्यवहार में स्थित हों। (4) सोमपा:-जो ऐश्वर्य के रक्षक और महौषधि रस का पान करने से रोगरहित और अन्य के ऐश्वर्य के रक्षक औषधों को देकर रोगनाशक हों। (5) **हविर्भुज्** जो मादक और हिंसाकारक द्रव्यों को छोड़कर भोज करने हारे हों। क्रमश:

सुखी कैसे रहें?

❑ भद्रसेन, 182-शालीमार नगर, होशियारपुर-146001 # 9464064398

गतांक से आगे....

6. धर्म और सुख-पूर्व विवेचन से यह स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि दिनचर्या और जीवनचर्या की व्यवस्था ही सुख का आधार है। इनकी व्यवस्था को व्यवस्थित बनाना ही धर्म है। धर्म शब्द धृ धातु से बनता है, अत: उन्हीं बातों का नाम धर्म है, जिनके धारण, पालन से सुख होता है। वैशेषिक दर्शन 1,1,2 महाभारत 12,110,10-11, 251, 4,254, 9 आदि के वचनों से भी यही प्रमाणित होता है। मनुस्मृति 6,92 के प्रसिद्ध धृति: क्षमा वाले धर्मलक्षणों में उन्हीं बातों का ही संकेत है, जिनसे दिनचर्या और जीवनचर्या व्यवस्थित होती है। यह ठीक है कि शास्त्रों में धर्म शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है, पर 'आचार: परमो धर्म:' (मनु० 1,108) ही मुख्य है। अत: पारस्परिक व्यवहारों को व्यवस्थित बनाकर जन-जन को सुखी बनाने वाले सत्य, स्नेह, ईमानदारी आदि आचार-व्यवहार ही धर्म हैं।

7. सफलता और सुख-प्रत्येक व्यक्ति जैसे अपनी चाहना की पूर्ति पर सुख अनुभव करता है वैसे ही हर एक की यह कामना होती है कि मेरा यह कार्य सफल हो, क्योंकि तभी वह सुखी हो सकता है। कार्य-कामना का मूर्तरूप होता है। कार्य के असफल होने पर व्यक्ति दु:खी, निराश, उदास हो जाता है। कई बार तो असफल होने पर हताश होकर व्यक्ति आत्महत्या तक कर लेता है।

प्रत्येक का यह अनुभव है कि किसी कार्य में सफलता तभी प्राप्त होती है जब व्यक्ति उस-उस क्षेत्र के अनुसार सही ढंग अपनाता है अन्यथा सारा किया-कराया धन, श्रम, शक्ति का व्यय व्यर्थ होकर रह जाता है। जैसे कि रसोई के ढंग से ही सभी की रसोई तैयार होती है और कृषि की प्रक्रिया को अपनाने से ही सबको अच्छी फसल प्राप्त होती है।

8. सुख-दु:ख के भेद और उपाय-अनुकुल-प्रतिकूल अनुभूति का नाम ही सुख-दु:ख है और अनुभव का सम्बन्ध शरीर, मन से अलग-अलग तथा इन दोनों से इकट्ठा भी होता है। इष्ट-अनिष्ट की प्राप्ति या वियोग आदि का अनुभव या अनुभव का फल जिस शरीर या मन पर पड़ता है, वह सुख-दु:खी उसी का कहलाता है। हाँ, सुख-दु:ख किसी क्रिया का नाम नहीं है, क्योंकि जो क्रिया आज सुख का कारण है, वही कल दु:ख दे सकती है। जैसे कि गर्मी में वस्त्र की न्यूनता या हीनता सुखद होती है, तो वही ठण्ड में दुखद बन जाती है। अत: सुख-दु:ख अनुभव पर निर्भर हैं। दु:खों को दूर करने और सुख प्राप्ति के उपाय पर जब हम विचार करते हैं तो स्पष्ट होता है कि दु:ख अनेक प्रकार के हैं। उनमें से कुछ दूर हो सकते हैं और कुछ सुख प्राप्ति के लिए अनिवार्य हैं। जैसे कि भोजन के आनन्द के लिए भूख का दु:ख या भोजन पकाने का कष्ट। हां, अनेक दु:ख व्यक्ति के अपने अज्ञान, असंयम, अदूरदर्शिता, स्वार्थपरता आदि के कारण होते हैं। इसीलिए संसार दु:खमय बना हुआ है, इनको हटाना चाहिए और ये काफी मात्रा में हट भी सकते हैं। दु:ख भी एक रोग है जो कि अज्ञान आदि के कारण होता है। अत: उस-उस कारण को दूर कर देने से वह हट सकता है।

9. सुख की कुञ्जी-यदि हम अपनी दिनचर्या निश्चित, व्यवस्थित बना लें, तो हम सरलता से सुखी हो सकते हैं। हमारे दु:खों का एक बड़ा कारण यह भी है कि हमारी दिनचर्या व्यवस्थित नहीं होती। दिनचर्या के अनियन्त्रित होने से हमारी आवश्यक इच्छायें पूर्ण नहीं होतीं और तब हम दु:खी होते हैं। यदि हम अपनी एक निश्चित दिनचर्या बना लें, तो हमारा जीवन बहुत सुखी हो सकता है। इच्छाओं की विविध श्रेणियों के अनुसार हम इनको पांच भागों में बांट सकते हैं। यदि हम इन पांचों को प्रतिदिन पूर्ण कर लें तो इच्छाओं की अपूर्ति से पश्चात्तापजन्य दु:ख नहीं होंगे कि मैंने अमुक कार्य तो अभी या आज तक किया ही नहीं?

इच्छाओं की पांच श्रेणियां इस प्रकार हैं—

1. शारीरिक विकास, 2. भौतिक समृद्धि, 3. आत्मिक उन्नति, 4. सामाजिक कर्त्तव्य और 5. आस्तिक बुद्धि।

हां, रुचि के भेद से इनके क्रम में मतभेद हो सकता है, पर इनकी उपयोगिता में संदेह नहीं। **क्रमश:**

गोरक्षा हिन्दू आस्था से ईर्ष्या या मिशनरी षड्यन्त्र?

गो है हिन्दू आस्था
पीड़ा उसकी है यही।
आस्था किसी और की
गलत भी होती सही।
हिन्दू हिन्दुस्तान का,
भेद इसको दीखता।
कट्टरता इसमें बसी
अहिष्णु अहिष्णु चीखता।
सिरमौर इसको मान बैठे,
क्या देन इसकी है यही?
गौ के प्रति आस्था से,
आँख जो इसकी बही।
धात्री गो मात रीढ
अर्थ के इस देश की।
बल बुद्धि पौरुष बढ़ाए
यह जीवन है स्वदेश की।
शब्द के आडम्बरों से,
चिलचिलाती धूप को।
चाँद-सी शीतल बनाने,
ले आ गए किस रूप को।
देश तो यह सोचता था,
प्रबुद्ध पावन पूत हैं।
देख सिर चकरा रहा,
ये हिंसकों के दूत हैं।
हिन्द में है सांझा सबका
भाई मुस्लिमों का मान है।
गोपय पावन पी रहे सब,
गौ मां भगवान् का वरदान है।
हिन्दुओं से आगे बढ़
गोरक्षा बन्धु कर रहे।
मुस्लिमों के नाम से क्यों,
आंसू उनके ढर रहे?
मुस्लिम भाई एक्यभाव
स्वदेश की पहचान हैं।
शैतान मिलकर दूसरे तीसरे,
कर रहे बदनाम हैं।
देख लो वसीयत चाहे,
अकबर का फरमान है।
बाबर से बहादुर शाह तक,
दिया अन्त तक अधिमान है।
सोच उल्टी वाम की,
जो पूजा करते चाम की।
डोर जिनके हाथ इनकी
वह डोर ही न काम की।
फिरंगियों के फांस ले,
सांस गहरा ले रहे।
मजहबी इस रोष से,
ये घाव गहरा दे रहे।
अनुच्छेद पच्चीस देखकर
एतराज ही कर देखते।
प्रबुद्ध माना देश ने,
सदा बिरयानी रहे सेकते।
सेक्युलर ये फासीवादी,
नित चुनौती दे रहे।
शोभा डे के अहं को भी,
हम हल्के में ही ले रहे।
औकात अपनी देखनी तो
शब्द ही कोई बोल दो।
चित्र बनाया हो नवी का
वह पेज ही या खोल दो।
एतराज उनके हाथ का
क्या साथ तुम यों दे रहे?
मजहबी जो एकता
क्या दाद उसको दे रहे?
प्रबुद्ध पावन देश का
शुभ सन्देश देते हैं।
वेदो के भारत का श्रद्धा से,
विश्व जन नाम लेते हैं।
पैगम्बर ने यह कहा
गोदुग्ध शिफा मक्खन मुफीद है।
अघ्न्या कहा वेद ने
हर देशभक्त यों मुरीद है।
अन्तकाय गोघातकम् कह
प्राणदण्डादेश है।
आज के संविधान से भी
बनता इन पर केस है।
मिल योजना से भरमा रहे
धूर्त-बढ़ा रहे उन्माद हैं।
निर्लिप्तता बिन विद्वत्ता
कोई होते नहीं बेलाग हैं।
वाणी पर संयम रक्खें
जो प्रबुद्ध पावन कहला रहे।
पंक्तियां इतिहास की लिख
क्यों लोक को बहका रहे?

—शिवलाल शास्त्री, पूर्व प्रध्यापक, भिवानी

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 20 नवम्बर 2015 को विवेकानन्द विद्यालय मोखरा जिला रोहतक का भव्य उत्सव सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में आचार्य वेदमित्र जी, प्रो० कटकड़ जी, श्री कुण्डू जी व श्री ओमप्रकाश जी के उपदेश हुए। मेधावी छात्रों को सम्मानित भी किया गया। इसी प्रकार दिनांक 26 नवम्बर 2015 को खाचरोली (झज्जर) में बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम हुआ। आचार्य जी ने वेदज्ञान के अनुसार कर्म पर अपना ओजस्वी भाषण दिया। अनेक युवकों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया तथा मेनपाल जी व अन्य युवाओं ने सुन्दर व्यवस्था की।

स्वास्थ्य-चर्चा

चीनी एक मीठा जहर

चीनी का एक सबसे प्रमुख गुण है कि वह खाने में मीठी होती है। लेकिन कोई यह बताये कि चीनी मीठी नहीं होती यह उसके कार्बनिक तत्त्वों के कारण मीठी प्रतीत होती है तो यह चौंकाने वाली बात होगी। लेकिन यह सच्चाई है कि चीनी अन्य कुछ कार्बनिक तत्त्वों की भांति एक ऐसा रासायनिक पदार्थ है तो मीठा लगता है जैसे आइस कैंडी को मीठा बनाने वाली सैक्रीन और शूगर फ्री के नाम से बाजार में मिलने वाला रासायनिक तत्त्व। चीनी एक ऐसा पदार्थ है जिसके फायदे कम हैं और नुकसान बहुत अधिक हैं। यह एक प्रमाण है कि चीनी का आविष्कार करने वाले पश्चिमी देश चीनी से तौबा कर चुके हैं और वहाँ खाने-पीने की चीजों को शूगर फ्री करने की मुहिम चल रही है। भोजन की तत्त्वों की विशेषताओं में यह वर्णित होता है कि यह शूगर फ्री है।

वास्तव में चीनी एक मीठा जहर है

(1) चीनी बनाने की प्रक्रिया में गंधक का सबसे अधिक प्रयोग होता है। गंधक यानी पटाखे और बारूद बनाने का मसाला। यह एक प्रकार का विष होता है जिसका प्रयोग शरीर में त्वचा सम्बन्धी बीमारियों, दाद-खुजली आदि के कीटाणुओं को मारने वाले मरहम में किया जाता है। जहां पानी में गंधक तत्त्व होता है उसे शरीर के त्वचा सम्बन्धी रोगों के निवारण के लिए अच्छा माना जाता है। चीनी को सफेद बनाने व चमकाने के लिए गंधक का प्रयोग होता है जो किसी न किसी रूप में शरीर में चीनी के साथ जाता है।

(2) गंधक अत्यन्त कठोर तत्त्व है जो शरीर में चला तो जाता है परन्तु बाहर नहीं निकलता। इसी तरह से चीनी शरीर में जाने के बाद नहीं निकलती है और अनेक प्रकार की व्याधियों को पैदा करती है। यहाँ तक कि जिस अन्य चीज के साथ चीनी खाई जाती है, उसमें भी शरीर की कोशिकाओं में जमने का अवगुण पैदा हो जाता है।

(3) चीनी रक्त में कॉलेस्ट्रॉल को बढ़ाती है जिसके कारण हृदयाघात या हार्ट अटैक आता है।

(4) चीनी शरीर के वजन को अनियन्त्रित कर देती है जिसके कारण मोटापा बढ़ता है।

(5) चीनी रक्तचाप या ब्लड प्रेशर को बढ़ाती है जो अनेक प्रकार के रोगों को जन्म देता है।

(6) चीनी ब्रेन अटैक का एक समुचित कारण है। अनेक लोग इस कारण से प्रतिवर्ष जान गंवा देते हैं।

(7) चीनी की मिठास को आधुनिक चिकित्सा में सूक्रोज कहते हैं जो इंसान और जानवर दोनों पचा नहीं पाते। यह सूक्रोज अन्य खाद्यों में शामिल होकर उन्हें भी अपचनीय बना देता है।

(8) चीनी बनाने की प्रक्रिया में तेइस हानिकारक रसायनों का प्रयोग किया जाता है। यह सभी किसी न किसी रूप में शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं।

(9) चीनी डाइबिटीज यानी मधुमेह रोग का एक प्रमुख कारण है। मधुमेह एक महामारी के रूप में फैलता जा रहा है और अनेक रोगों को जन्म देकर दीमक की तरह से शरीर को खोखला कर देता है।

(10) चीनी पेट की जलन का प्रमुख कारण है जो एसिडिटी व लीवर से जुड़े रोगों को जन्म देती है।

(11) चीनी शरीर में ट्राइ ग्लिसराइड को बढ़ाती है। यह भी गुर्दे, लीवर के रोगों का कारण होती है।

(12) चीनी पेरेलिसिस या लकवा होने का एक प्रमुख कारण है। नर्वस सिस्टम को प्रभावित करती है।

यह कितना विचित्र है कि गन्ने से ही चीनी का निर्माण होता है और गन्ने से ही गुड़ का लेकिन गुड़ तो गुणों की खान है और चीनी जहर का भण्डार। इसी कारण सारा विश्व शूगर फ्री के नाम पर चीनी से तौबा कर रहा है। चीनी के जन्मदाता ब्रिटेन ने ही चीनी को त्याग दिया है लेकिन भारतीयों की रग-रग में बसकर यह बीमारियां पैदा कर रही है।

बदलते मौसम में गुणों की खान है—गुड़

बदलते मौसम में अनेक गुणों को समेटे हुए है गुड़। गुड़ की तासीर गर्म है, इसलिए इसका सेवन जुकाम और कफ से आराम दिलाता है। जुकाम के दौरान अगर आप कच्चा गुड़ नहीं खाना चाहते हैं तो चाय या लड्डू में भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

एनर्जी के लिए बहुत ज्यादा थकान और कमजोरी महसूस करने पर गुड़ का सेवन करने से आपका एनर्जी लेवल बढ़ जाता है। गुड़ जल्दी पच जाता है, इससे शूगर का स्तर भी नहीं बढ़ता। दिनभर काम करने के बाद जब भी आपको थकान हो, तुरन्त गुड़ खाएं। मीठा होने के बाद भी गुड़ का सेवन शुगर के रोगियों के लिए नुकसानदायक नहीं होता है।

ताप नियंत्रक-गुड़ शरीर के टेंपरेचर को नियंत्रित रखता है। एंटी एलर्जिक तत्त्व हैं, इसलिए दमा के मरीजों के लिए इसका सेवन फायदेमंद होता है। यह बुखार में भी लाभदायक होता है।

दर्दनाशक-जोड़ों के दर्द में आराम **रोज गुड़** के एक टुकड़े के साथ अदरक का **सेवन करें**, इससे जोड़ों के दर्द की दिक्कत **नहीं होगी। गुड़** और घी मिलाकर खाने से कान का **दर्द ठीक हो** जाता है।

गले के लिए लाभदायक-गुड़ के **साथ पके** हुए चावल खाने से बैठा हुआ गला व आ**वाज खुल** जाती है।

अस्थमा की परेशानी-गुड़ और काले तिल के लड्डू खाने से सर्दी में अस्थमा की परेशानी नहीं होती है। पांच ग्राम गुड़ को इतने ही सरसों के तैल में मिलाकर खाने से श्वास रोग नहीं होता है।

जुकाम में लाभ-जुकाम जम जाने पर पिघले गुड़ की पपड़ी खिलाएं। इससे छाती में जमा जुकाम ठीक होता है।

पाचक-भोजन के बाद गुड़ खा लेने से पेट में गैस नहीं बनती। पांच ग्राम सोंठ दस ग्राम गुड़ के साथ लेने से पीलिया में लाभ होता है। गुड़ का हलवा खाने से स्मरणशक्ति बढ़ती है।

—संजय कालीरामणा, बुसान, तोशाम

अपील

सभी आर्यसमाजों, सदस्यों, सक्षम दानी महानुभावों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के परिसर में 24 कमरों का निर्माण कार्य चल रहा है। सभा कार्यालय परिसर में ऋषिलंगर (भोजनालय) चलता है। अतिथियों के लिए भोजन की नियमित सुन्दर व्यवस्था की जा रही है। सभा के ऋषिलंगर (भोजनालय) में साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी नि:शुल्क भोजन करते हैं। साथ ही प्रतिदिन प्रात:-सायं नियमित रूप से यज्ञ किया जाता है। आप अपनी वैवाहिक वर्षगांठ, जन्मदिवस, गृहप्रवेश या अन्य अवसर पर सहयोग कर सकते हैं। सहयोगदाता का नाम सभा के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किया जायेगा। अत: समस्त दानी महानुभावों से अपील है कि सभा परिसर में चल रहे निर्माणकार्य एवं सभा के ऋषिलंगर भोजनालय हेतु अधिक से अधिक दानराशि एवं आटा, दाल, चावल, घी, गेहूँ अथवा अन्य प्रकार से सहयोग देकर एक आहुति अवश्य डालें और इस पवित्र यज्ञ के सफल संचालन में सहभागी बनें।

नोट—दो लाख पचास हजार रुपये देने वाले दानी महानुभावों का नाम नवनिर्मित कमरे के साथ उसके नाम का पत्थर लगाया जाएगा।

निवेदक—

आचार्य बलदेव	आचार्य विजयपाल	मा. रामपाल आर्य	कन्हैयालाल आर्य
सभा-संरक्षक	सभा-प्रधान	सभा-मन्त्री	सभा-कोषाध्यक्ष

पारिवारिक यज्ञ व वेदप्रचार सम्पन्न

वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार के पूर्व प्रधान डॉ० बलवन्त सिंह आर्य के घर मिर्जापुर गांव में पारिवारिक यज्ञ व वेदप्रचार किया गया। आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी जी ने यज्ञ करवाया। यह कार्यक्रम 25.11.2015 को किया गया। डॉ० साहब के दोनों पुत्रों जितेन्द्र आर्य, बलराम आर्य दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया।

मंच का संचालन करते हुए वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। महिलाओं से पर्दाप्रथा हटाने तथा पुरुषों से शराब न पीने का आग्रह किया। वेदप्रकाश आर्य (खाण्डा) ने योग के महत्त्व पर विचार रखे। चौ० रामस्वरूप आर्य व चौ० निहालसिंह पूर्व इंस्पेक्टर ने भी अपने विचार रखे।

वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने आत्मा-परमात्मा पर अपने विचार रखे। युवकों को माता-पिता की सेवा करने का सुझाव दिया। आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी ने सुखी गृहस्थ पर सारगर्भित विचार रखे। महर्षि दयानन्द पर एक भजन रखा। इस अवसर पर श्री राजेन्द्रसिंह, प्यारेलाल आर्य, कुलवीर, विनोद, नरेन्द्र आर्य, अरविन्द्र आर्य आदि के अतिरिक्त काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। शान्तिपाठ के बाद श्रद्धा से ऋषिलंगर में भोजन किया।

महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में 6 दिसम्बर 2015 को पानीपत में होने वाले आर्य युवा महासम्मेलन को सफल बनाने हेतु 28.11.2015 को आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार में प्रात: 10 बजे सभामन्त्री मा० रामपाल आर्य तथा महासम्मेलन के प्रचार समिति के सदस्य वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने बैठक को सम्बोधित किया। सम्मेलन में ज्यादा से ज्यादा युवाओं को लेकर पहुँचने की अपील की।

इस अवसर पर वेदप्रचार मण्डल के निम्न सदस्यों ने भाग लिया-प्रधान श्री रामकुमार आचार्य, आचार्य दयानन्द शास्त्री, आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी, आचार्य मानसिंह पाठक, ब्रह्मचारी दीपकुमार आर्य, श्री किशनलाल आर्य, चौ० निहालसिंह आर्य पूर्व इंस्पेक्टर, सूबेदार हरीसिंह आर्य, सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, श्री कैलाश शास्त्री आदि ने अपने-अपने विचार रखे तथा पानीपत महासम्मेलन में पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया। उसके बाद स्नेही जी व मंत्री जी फतेहाबाद व सिरसा के लिए रवाना हो गये।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मंत्री
वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 12, 13 मार्च 2016 (शनिवार, रविवार) को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा।

आप सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि इस शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक :

विद्यार्यसभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें। —सभामन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी, रोहतक के प्रांगण में शुक्रवार, दिनांक 11 दिसम्बर से रविवार 13 दिसम्बर 2015 तक ऋग्वेद आंशिक यज्ञ भजन एवं उपदेश का आयोजन किया जा रहा है जिसमें अध्यक्ष-आचार्य बलदेव जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली), विशिष्ट अतिथि-श्री रामपाल दहिया (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), मुख्यवक्ता-आचार्य प्रमोद योगार्थी (प्राचार्य, ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार), मुख्य अतिथि श्री सूरजमल रोज (पार्षद, नगर निगम, रोहतक), भजनोपदेशक-श्रीमती सन्तोष आर्या (गन्नौर), यज्ञ ब्रह्मा-स्वामी ध्रुवानन्द (गोरड़ आश्रम, सोनीपत) होंगे।

आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से अनुरोध है कि कार्यक्रम में पहुंचकर धर्म लाभ उठावें।

—कर्णसिंह मोर, प्रधान आर्यसमाज प्रेमनगर
दुर्गा कालोनी, रोहतक मो० 9728884949

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज मण्डी डबवाली जिला सिरसा	9 से 13 दिसम्बर 2015
2.	आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी, रोहतक	11 से 13 दिसम्बर 2015

—सभामन्त्री

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान
शुद्ध एम डी एच हवन सामग्री

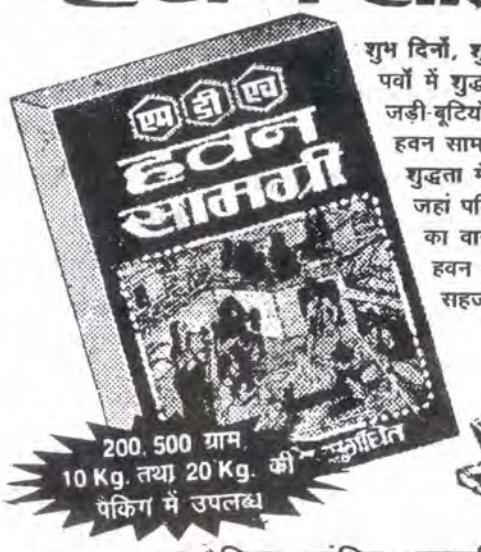

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द स्वाई दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

पोप गुणगान

छल-कपट से लूटता जो हर समय यजमान को।
सत्य माने न कभी न वेद के प्रमाण को॥
धर्म के विपरीत-पन्थों का करे प्रचार जो।
पोपलीलाओं से जिसका हर समय ही प्यार हो॥
अपने को कहता हो ब्राह्मण पर न कुछ भी ज्ञान हो।
केवल अपने जन्म पर ही कर रहा अभिमान हो॥
बन गुरु चेलों से नित करवाता जो सम्मान है।
साधु होकर भी सदा ठगने में जिसका ध्यान है॥
धर्म के शुभ नाम पर पाखण्ड फैलाता हो जो।
वेद के विपरीत सारे कर्म करवाता हो जो॥
बुद्धि के अनुकूल जिसका कोई भी ना काम हो।
'**सेवक**' ऐसे गुण हों जिसमें '**पोप**' उसका नाम हो॥

(नकली देवपूजा)

पोप जी तो देवता-जड़ पत्थर से बनवा रहे।
पूजा नकली देवताओं की कर रहे करवा रहे॥
माल-धन यजमानों का है लूटकर यह खा रहे।
वेद के विपरीत उल्टा कर्म है करवा रहे॥
आर्यो को कहते हैं कि देव को मानें न यह।
गर जो देखा पोप को तो देव को जाने न यह॥

(असली देवपूजा)

आर्यों की देवपूजा-वेद के अनुसार है।
आर्यों को ही तो असली देवताओं से प्यार है॥
महर्षि स्वामी दयानन्द जी का यह उपकार है।
पञ्चमहायज्ञविधि पुस्तक जो करी तैयार है॥

(सत्यार्थप्रकाश)

सत्यार्थप्रकाश का पढ़ना यदि, जन-जन में प्यारा हो जाये।
पढ़ करके सभी अमल करें, वैदिक उजियारा हो जायें॥
फूले फुलवाड़ी वेदों की जग से अन्धियारा मिट जाये।
सत्य धर्म पर अमल करें, स्वर्ग सारा जग बन जाये॥

भेंटकर्त्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य 'सेवक' आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत

क्यों माने ईश्वर को ? .... पृष्ठ 2 का शेष.......

की प्राप्ति होती है। मनुष्य को स्वस्थ जीवन का लाभ होने के साथ सुख व समृद्धि सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की उपलब्धि होती है। इसके विपरीत ईश्वर को न मानने पर मनुष्य इन अधिकांश लाभों से वंचित हो जाता है। उसे केवल अपने सत्यासत्य कर्मों के फल ही ईश्वर की व्यवस्था से प्राप्त होते हैं। ईश्वर से जो सत्प्रेरणायें जीवात्माओं को प्राप्त होती है उसका अनुभव अधार्मिक नास्तिक लोग नहीं कर पाते। असली सहिष्णुता ईश्वर को मानने वाले धार्मिक लोगों में ही पायी जाती है। ईश्वर के सच्चे स्वरूप को न जानने व मानने वाले लोग सहिष्णुता का दिखावा करते हैं, वह सहिष्णुता के मूल स्वभाव व चरित्र से कोशों दूर होते हैं। जीवात्मा अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अविनाशी व अमर है। इसका पुनर्जन्म सुनिश्चित व अवश्यम्भावी है जो जीवात्मा के कर्मानुसार ईश्वर द्वारा दिया जाता है। यदि ईश्वर को नहीं मानेंगे तो हमारा आगामी जीवन बिगड़ेगा अर्थात् निम्न व नीच योनियों में जन्म लेकर दीर्घ अवधि तक दुःखों को भोगना ही होगा। ईश्वर को मानकर और उसकी वैदिक विधि से स्तुति, प्रार्थना उपासना कर नास्तिकों व अर्धनास्तिक मत-पन्थ के अनुयायियों को होने वाली हानियों से बचा जा सकता है।

196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001
फोन:09412985121

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक **मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद।** —व्यवस्थापक

ऋषि दयानन्द जीवन चरित

ऋषि दयानन्द जीवन चरित लिखने का, बहुतों ने काम किया है।
पण्डित लेखराम ने सर्वोत्तम गाथा लिख, जग में नाम किया है॥
लेखराम ने घूम-घूमकर तब दर-दर छान लिया था।
ऋषि दयानन्द के समकालीन परिचितों से ज्ञान लिया था।
बृहत् जीवनी लिखने का प्रण पंडित जी ने ठान लिया था।
पर विस्तृत योजना धरी रह गई विधर्मी ने उनका प्राण लिया था।
निज प्राणों की आहुति देकर पण्डित ने, यश का काम किया है।
ऋषि दयानन्द जीवन चरित लिखने का, बहुतों ने काम किया है॥ 1॥
मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी ने भी प्रथम प्रयास किया था।
गोपालराव हरिशर्मा ने भी ऋषि जीवन लिखने का सुयास किया था।
दो भागों में जीवन चरित लिखकर दयानन्द दिग्विजय नाम दिया था।
तीसरी पुस्तक ऋषि बलिदान के बाद छपवाने का काम किया था।
पूना प्रवचनों में स्वयं ऋषि ने, निज जीवन संकेत दिया है।
ऋषि दयानन्द जीवन चरित लिखने का, बहुतों ने काम किया है॥ 2॥
श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने भी, ऋषि जीवन पर काम किया था।
बंगला भाषा में लघु पुस्तिका लिख 'ऋषि जीवन' नाम दिया था।
पण्डित लक्ष्मण आर्योपदेशक ने भी, खोजपूर्ण काम किया था।
समस्त सामग्री को क्रमबद्ध लिखकर अप्रतिम काम किया था।
आधार रूप में सभी लेखकों ने पंडित लेखराम को मान दिया है।
ऋषि दयानन्द जीवन चरित लिखने का, बहुतों ने काम किया है॥ 3॥
स्वामी सत्यानन्द जी ने भी 'श्रीमद्दयानन्द जीवन' तैयार किया।
कुछ अलग ढंग से पुस्तक लिखकर, आर्यों का उद्धार किया।
आचार्य जगदीश विद्यार्थी ने 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' तैयार किया।
श्री लेखराम, देवेन्द्रनाथ व सत्यानन्द लिखित गाथा से ही सार लिया।
'आर्य धर्मेन्द्र जीवन' पुस्तक लिख, हरबिलास शारदा ने भी नाम किया है।
ऋषि दयानन्द जीवन चरित लिखने का, बहुतों ने काम किया है॥ 4॥
श्री भवानीलाल भारतीय ने 'नवजागरण का पुरोधा' पुस्तक लिखी।
पर मूल रूप से इस पुस्तक में भी लेखराम की सामग्री दिखी।
लाला लाजपतराय, मेहता राधाकिशन व स्वामी श्रद्धानन्द ने गाथा लिखी।
विश्वप्रकाश पं० चमूपति व युधिष्ठिर मीमांसक ने भी बात वही लिखी।
वीर संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने भी ऋषि जीवन पर काम किया है।
ऋषि दयानन्द जीवन चरित लिखने का, बहुतों ने काम किया है॥ 5॥
अभी-अभी श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने, ऐतिहासिक काम किया है।
दो भागों में 'सम्पूर्ण जीवन चरित' लिख एक अनुपम काम किया है।
सदियों से लुप्त दबी पड़ी सामग्री को, पत्र-पत्रिकाओं से खोज लिया है।
महत्त्वपूर्ण द्रष्टव्यों साक्षियों का दुर्लभ चित्रों सहित प्रमाण दिया है।
पच्चीस वर्ष तक लगे रहे खोज में, जिज्ञासु जी ने ऋषि ऋण उतार दिया है।
ऋषि दयानन्द जीवन चरित लिखने का, बहुतों ने काम किया है॥ 6॥

—देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य,
म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी, मो० 9416337609

आवश्यक निवेदन

प्रिय पाठकवृन्द,

'**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक आपका अपना, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मुख-पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बने। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुँचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़ें और इसे पसन्द करें। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए '**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक की ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे-सम्बन्धियों को इसके ग्राहक बनायें। साथ ही अपना पत्रिका का वार्षिक शुल्क 150/- रु० भी प्रेषित करें।

विशेष—बार-बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बने। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार सम्पादक-'**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक दयानन्दमठ रोहतक के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें। **—मा० रामपाल आर्य, सभामंत्री**

अनुभवी अध्यापक उत्तम शिक्षा का साधन

❑ डॉ० अशोक आर्य, 107, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

शिष्य के लिए सदा उन्नति का कारण, शिष्य के लिए सदा प्रगति का कारण, शिष्य के लिए सदा अमृतत्त्व की प्राप्ति का कारण अनुभवी गुरु ही होता है। यदि गुरु अनुभवी है तो वह कुछ इस प्रकार के साधनों तथा व्यवहारों का प्रयोग करता है, अनुभवी गुरु कुछ इस प्रकार युक्तियों का प्रयोग करता है (जो नए गुरु के पास अनुभव के अभाव में नहीं होतीं), जिनसे शिष्य बड़ी सरलता से पाठ को आत्मसात् कर सकता है तथा वेद के रहस्यों को शीघ्र ही समझ पाने में समर्थ हो जाता है तथा थोड़े ही समय में शिक्षा के बहुत बड़े भाग का स्वामी बन जाता है। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद में इस प्रकार कहा गया है—

अशोक आर्य

अक्षेत्रवित्क्षेत्रविदं ह्याप्राट् स प्रेति क्षेत्रविदानुशिष्टः।
एतद्वै भद्रमनुशासनस्योत स्त्रुतीं बिन्दत्यञ्जसीनाम्॥ (ऋग्वेद 10.32.7)

हम जानते हैं कि एक अध्यापक जब बच्चों को पढ़ाता है तो वह तैयार किया हुआ अथवा रटा हुआ पाठ बड़ी सरलता से पढ़ा लेता है। इसमें साधारणतया उसे किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। यदि कुछ थोड़ी-सी समस्या आती भी है तो वह अपनी किसी न किसी युक्ति से उस समस्या का समाधान खोज ही लेता है। यह उसके दैनिक व्यवहार का भाग होता है किंतु समस्या उस समय उसके सामने खड़ी होती है, जब उसके पास आए हुए शिक्षार्थी कोई प्रश्न कर देते हैं। अनेक बार तो देखा गया है कि विद्यार्थी के कुछ प्रश्न तो इस प्रकार के होते हैं, जिनकी जिज्ञासा के लिए एक अनुभवी अध्यापक को भी चक्कर आने लगते हैं किन्तु वह अपनी युक्तियों से इस समस्या का समाधान खोज लेता है अथवा तात्कालिक रूप से कुछ इस प्रकार चर्चा करता है कि विद्यार्थी शांत हो जाता है, जबकि नए अध्यापक की अवस्था अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के सामने इस अवसर पर हास्यास्पद-सी बन जाती है, क्योंकि वह ठीक से समाधान न दे पाने के कारण बगलें झांकने लगता है। विद्यार्थी इस प्रकार के नए अध्यापक के उपहास का कारण बन जाते हैं। विद्यार्थी जो शंकाएं करते हैं, वह तीन कोटि में बांटी जा सकती है। यथा—

1. तत्काल उत्तर देने योग्य शंका-

इस श्रेणी में हम उन शंकाओं को रखते हैं, जो साधारण प्रकार की होती हैं तथा जिनका समाधान बड़ी सरलता से बिना इधर-उधर से कोई प्रमाण खोजे किया जा सकता है। इस प्रकार की शंकाओं का समाधान कोई भी अध्यापक तत्काल कर सकता है।

2. अल्पकालिक शंका-

विद्यार्थियों की कुछ जिज्ञासाएं तो इस प्रकार की होती हैं कि जिनके समाधान के लिए अध्यापक को थोड़ा-सा समय लग सकता है। इस अल्पकाल में वह इस समाधान का उत्तर खोज कर विद्यार्थी को उसकी जिज्ञासा का समाधान देकर शान्त कर सकता है। इसमें पुराने अनुभवी अध्यापक को कठिनाई नहीं आती किन्तु नए अध्यापक स्वयं को कुछ असहज-सा अनुभव करते हैं।

3. दीर्घकालीन शंका-

तृतीय तथा अन्तिम प्रकार की जिज्ञासा, जो अध्यापक की परेशानी का कारण होती है, उसे दीर्घकालीन शंका के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार की शंका के समाधान के लिए अध्यापक को कुछ समय की आवश्यकता होती है, ताकि वह इसके समाधान के लिए कुछ पुस्तकों को देखकर, इस समस्या का समाधान खोज सके। इस समस्या के आने पर अनुभवी अध्यापक विद्यार्थी को शान्त करते हुए कहता है कि आपकी समस्या का समाधान करने में मुझे कुछ समय लगेगा, इसलिए इसका उत्तर दूसरे दिन दिया जाएगा किन्तु नए विद्यार्थी के पास तत्काल रूप से इस जिज्ञासा का समाधान न होने से वह झुंझला उठता है और अकारण ही विद्यार्थियों को डांटने लगता है। इससे विद्यार्थी भी उत्तेजित हो जाते हैं तथा अध्यापक से उलझ जाते हैं और सब प्रकार से उस नए अध्यापक का अपमान करने पर उतर आते हैं।

इसलिए ही ऋग्वेद का यह मन्त्र उपदेश करते हुए कह रहा है कि विद्यार्थी जब अनुभवी शिक्षक से शिक्षा प्राप्त करता है, जो अध्यापक अनुशासन के महत्त्व पर बल देते हुए इसकी आवश्यकता से विद्यार्थी को परिचित कराता है तो वह विद्यार्थियों के हृदयों पर शासन करता है, क्योंकि विद्यार्थी उसके उपदेशों को न केवल सरलता से समझते ही हैं अपितु उस पर आचरण भी करते हैं तथा निरन्तर आगे बढ़ते हैं और प्रगति को, सफलता को प्राप्त होते हैं।

मन्त्र कहता है कि अनुशासन प्रिय व्यक्ति को सदा ही उत्तम फल के दर्शन होते हैं। अनुशासन का मार्ग सदा ही कल्याण का मार्ग माना जाता है। इस कल्याणकारी मार्ग को जो व्यक्ति पकड़ लेता है, वह स्वयं तो आगे बढ़ता ही है, इसके साथ ही साथ वह अपने साथियों का हाथ पकड़कर उन्हें भी आगे ले जाने में सफल होता है। इस प्रकार के शिष्य को उसके अभीष्ट, जो उसके लिए आवश्यक होता है, वह सब शुभकामनाएं, वह सब सुख उसे प्राप्त होते हैं क्योंकि इस उत्तम मार्ग को वह प्राप्त कर लेने में सफल होता है।

इस प्रकार के शिष्य को उसके अभीष्ट, जो उसके लिए आवश्यक होता है, वह सब शुभकामनाएं, वह सब सुख उसे प्राप्त होते हैं क्योंकि इस उत्तम मार्ग को वह प्राप्त कर लेने में सफल होता है।

आज के विद्यार्थी और अध्यापक की जो शोचनीय अवस्था बनी हुई है, उस अवस्था के लिए आज का विद्यार्थी स्वयं तो उत्तरदायी है ही, इसके साथ ही साथ आज के अध्यापक का योगदान भी कम नहीं है। इसका एक मात्र समाधान है वेद की शिक्षाएँ प्राप्त करने के लिए वेद की शरण में जाना। यह ही एकमात्र उपाय है, जिससे विद्यार्थी और अध्यापक दोनों को ही शान्ति और सफलता मिला सकती है।

चार पुरुषार्थों की संक्षिप्त.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

रखा जिसमें ईश्वर की सच्ची उपासना सन्ध्या, यज्ञ व अष्टांग योग है, जिनके द्वारा मनुष्य अपने जीवन को पवित्र बनाकर ही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त अन्धविश्वासों में अपने जीवन को नष्ट करना है।.

2. अर्थ-पुरुषार्थ में अर्थ यानि धन का दूसरा स्थान है। वेद कहता है कि धन चाहे कितना कमाओ लेकिन धर्म के साथ कमाना चाहिए। धर्म से कमाया हुआ धन ही अर्थ है, नहीं तो सब अनर्थ है। धर्म से धन कमाने का तात्पर्य है कि सच्चाई, ईमानदारी, परोपकार की भावना व कर्त्तव्य भाव से धन कमाना चाहिए। आप कोई भी काम करो, चाहे व्यापार हो, चाहे खेती हो, चाहे नौकरी हो या अन्य कोई सेवा कार्य हो। सभी को धर्म व कर्त्तव्य का ध्यान रखते हुए करना चाहिए। उसमें किसी का भी अहित नहीं होना चाहिए। धर्म के साथ ही धन कमाना सच्चा पुरुषार्थ है, जो मनुष्य को मुक्ति की ओर ले जाता है।

3. काम-काम का तात्पर्य विषय-भोगों के साथ-साथ सभी कामनाएँ यानि इच्छाएँ भी धर्म के अनुसार होनी चाहिए। विषय-भोग समय पर केवल अच्छी सुयोग्य सन्तान राष्ट्र को देने के उद्देश्य से करना चाहिए। अच्छी व सुयोग्य सन्तान यदि आप राष्ट्र को देंगे तो राष्ट्र सदैव उन्नति व समृद्धशाली बनता जायेगा और मानवता का भी उद्धार होगा। मनुष्य को अपने शरीर की आवश्यकताएँ कम से कम रखनी चाहिए और परिश्रम अधिक से अधिक करना चाहिए तभी 'काम' को सच्चा पुरुषार्थ कह सकेंगे।

इस प्रकार आप यदि तीनों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को धर्म की भावना यानि परोपकार की भावना कर्त्तव्य परायण होकर इच्छा और कामनाओं के बिना लिप्त हुए त्याग भाव से जीवन में कार्य करोगे तो मोक्ष मिलना निश्चित है। वेद भी हमें इस मन्त्र द्वारा यही शिक्षा देता है। **'तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।'**

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7 फोन 033-22183825, 64505013, ऑफिस-26758903

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक मा० रामपाल आर्य ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।